महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में स्वामी विवेकानन्द की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधन

स्थान:- राष्ट्रपति भवन दिनांक :- 12 जनवरी, 2013 समय :-

युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत स्वामी विवेकानन्दजी की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर यहां आयोजित युवा सम्मेलन के शुभारम्भ समारोह में उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

“उठो, जागो व लक्ष्य को प्राप्त होने तक न ठहरो”, जैसे प्रेरक संदेश देने वाले स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती “युवा दिवस” के अवसर पर उन्हें शत-शत नमन। हमें स्वामी विवेकानन्द जी से सीख लेकर हमारे देश भारत को फिर से विश्व गुरू, विश्व शक्ति और सोने की सिंहनी बनाना है।

वर्ष 1883 को आज के ही दिन जन्में स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरू थे। सन् 1884 में उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्ता की मृत्यु हो के बाद घर का भार उन पर आ पड़ा। घर की दशा बहुत खराब थी। अत्यंत गरीबी में भी नरेंद्र बड़े अतिथि-सेवी थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। सन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ।उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो नगर में आयोजित विश्व धर्म महासम्मेलन में सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का वेदान्त अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानंद की वक्तृता के कारण ही पहुंचा।

वे रामकृष्ण परम हंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्होंने राम कृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। राम कृष्ण परम हंस से पहले तो वे तर्क करने के विचार से ही गये थे किंतु परम हंसजी ने देखते ही पहचान लिया था कि ये तो वही शिष्य है जिसका उन्हें कई दिनों से इंतेजार है। आत्म-साक्षात्कार हुआ फलस्वरूप नरेंद्र परमहंस जी के शिष्यों में प्रमुख हो गये। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन गुरूदेव स्वामी परमहंस को समर्पित कर चुके थे।

महापुरूषों के पत्रों से उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते हैं। स्वामी विवेकानन्द के पत्र उनके सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न दिव्य जीवन पर प्रकाश डालते हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति और धर्म के कलेवर में नव चैतन्य का संचार किया था। स्वामी जी ने अपने अल्प जीवन में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र ओर प्रगतिशील समाज की परिकल्पना की थी। अपने भारत भ्रमणकाल के दौरान स्वामीजी ने विभिन्न धर्मों के मूल को समझा और उन्होंने पाया कि सभी धर्मों में उन्हें शाश्वत एकत्व दिख रहा है।

शिकागो के विश्व धर्म परिषद सम्मेलन में स्वामी जी ने किसी भी धर्म की निंदा या समालोचना नहीं की अपितु उन्होंने कहा- 'ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं बनना होगा और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई ही। पर हां प्रत्येक धर्म को अपनी स्वतंत्रता और वैशिष्टय को बनाए रखकर दूसरे धर्मों का भाव ग्रहण करते हुए क्रमश: उन्नत होना होगा। उन्नति या विकास का यही एक मात्र नियम है।' स्वामी की शिकागो वक्तृता भारत वर्ष की मुक्ति का संक्षिप्त लेखा है। भागिनी निवेदिता ने लिखा है कि शिकागो की धर्म सभा में जब स्वामीजी ने भाषण आरंभ किया तो उनका विषय था- "हिन्दुओं के प्राचीन विचार, पर जब उनका भाषण हुआ तो आधुनिक धर्म की सृष्टि हो चुकी है।

स्वामी जी की विचार सम्पदा आज की युवा पीढ़ी की प्रतिनिधि मार्ग दर्शक है। वे कहते थे- उठो मेरे शेरो, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वछंद जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तुम तत्व नहीं हो, ना ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है तुम तत्व के सेवक नहीं हो। उनका कहना था ब्राह्माण्ड कि सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं, वो हमीं हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अन्धकार है। उनके विचार में जिस तरह से विभिन्न स्त्रोतों से उत्पन्न धराएं अपना जल समुद्र में मिला देती हैं उसी प्रकार मनुष्य द्वारा चुना हर मार्ग, चाहे अच्छा हो या बुरा, भगवान तक जाता है। उनका आग्रह था कि किसी की निंदा ना करें, अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं तो जरूर बढ़ाएं अगर नहीं बढ़ा सकते तो अपने हाथ जोड़िये, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिये और उन्हें उनके मार्ग पे जाने दीजिये ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन्नीसवीं सदी के अंत तक जो लड़ाई धर्म के क्षेत्र में लड़ी जा रही थी 1905 में उसने स्वदेशी आन्दोलन का राजनैतिक रूप धारा किया। इसमें राष्ट्रीय एकता का जो प्रदर्शन हुआ उसके कारण ब्रिटिश सरकार को बंग-भंग की योजना रदद करनी पड़ी और आन्दोलन से स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्वराज का चार सूत्रीय कार्यक्रम निर्धारित हुआ।

इसके अलावा 1905 से क्रांति के जो गुप्त संगठन बने उनकी मुख्य प्रेरणा भी स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएं थीं। पुलिस ने जिन क्रांतिकारियों के घरों में गुप्त तलाशियां लीं उनमें विवेकानन्द साहित्य जरूर मिला। इकबाल का कौमी तराना- "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" और "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा" इसी आध्यात्मिक विजय से प्रेरित होकर लिखे गए।

विवेकानन्द जी युवाओं से कहते थे- “युवा शक्तिमान है, उठो तथा सामर्थ्यशाली बनों। कर्म, निरंतन कर्म और संघर्ष करो। पवित्र और नि:स्वार्थी बनने की कोशिश करो। काम क्रोध एवं लोभ-इस त्रिविध बंधन से मुक्त होकर ईष्या तथा अहंकार से बहुत दूर- संगठित होकर दूसरों के लिए कार्य करने की आज आवश्यकता है।

सामाजिक परिवर्तन के रूप में युवा विशेष भूमिका अदा कर सकते हैं और उनकी असीम शक्ति विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों को नयी गति और दिशा प्रदान कर सकती है जो कि हमारे समाज और राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से कायाकल्प कर सकते हैं।

साम्प्रदायिकता और क्षेत्रवाद का मुकाबला करना हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है। ये शक्तियां समाज में भेदभाव उत्पन्न कर विभिन्न धर्मावलंबियों में परस्पर घृणा और अंधविश्वास की दीवारें खड़ी करती हैं। युवाओं को आज संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वह युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत स्वामी विवेकानन्द एवं गांधी जी के धार्मिक सौहार्द्र एवं सामाजिक सदभावना के मूल्यों का और अधिक प्रचार-प्रसार करें।

मैं एक बार पुन: आप सबको बधाई और शुभकानाएं।

जय हिन्द।